❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

देव त्वष्टर्वर्धय सर्वसातये। अथर्ववेद 613/3

सब सुखों के दाता परमेश्वर ! जगत निर्माता प्रभो!
हमें इतना समृद्ध कर कि सब कुछ पा सकें।

O God ! The bestower of happiness and prosperity, Creator of the world ! make us so capable that we way attain all that we aspire for.

वर्ष 41, अंक 19 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 26 फरवरी, 2018 से रविवार 4 मार्च, 2018
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

52वें स्मृति दिवस
26 फरवरी पर विशेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से प्रेरणा प्राप्त सच्चे वीर सिपाही थे
विनायक दामोदर सावरकर

...हैदराबाद के निजाम द्वारा वहाँ की हिन्दू जनता पर हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध आर्य समाज द्वारा दिसंबर 1938 को आर्य महासम्मेलन में घोषित हैदराबाद का प्रसिद्ध आर्य सत्याग्रह 'धर्मयुद्ध' में वीर सावरकर जी ने हिन्दू सभा की ओर से सर्वाधिकारी बनकर सत्याग्रह में सर्वस्व झोंक कर आर्यों की सहायता की। करीब 12 हजार आर्यसमाजी जुड़ें एवं अन्य 4 हजार लोगों ने निजाम राज्य की जेलों में कष्ट सहे। एक बार वीर सावरकर जी ने महर्षि दयानन्द जी की पुस्तक 'सत्यार्थ-प्रकाश' के बारे में कहा, हिन्दू जाति की ठंडी रगों में उष्ण रक्त का संचार करने वाला ग्रंथ 'सत्यार्थ-प्रकाश' अमर रहे।....

मराठी चितपावन ब्राह्मण परिवार में 28 मई, 1883 को जन्में विनायक दामोदर सावरकर जब मात्र नौ साल के थे तब उनकी माता राधाबाई सावरकर का देहांत हो गया था। उनका परिवार महाराष्ट्र के नाशिक शहर के पास भंगुर ग्राम में रहता था। उनके और तीन भाई-बहन भी थे, जिनमें से दो भाई गणेश और नारायण एवं एक बहन थी। माता के देहांत के करीब सात वर्ष बाद, वर्ष 1899 में प्लेग महामारी के चलते उनके पिताजी का भी स्वर्गवास हो गया। पिता की मृत्यु के बाद परिवार चलाने का कार्यभार बड़े भाई गणेश सावरकर ने संभाल लिया था। 1901 में विनायक का विवाह रामचंद्र त्रिंबक चिपलूनकर की बेटी यमुनाबाई से हुआ, उन्होंने ही विनायक की यूनिवर्सिटी पढ़ाई में सहायता की थी।

अपनी डिग्री की पढ़ाई पूरी करने के बाद, महर्षि दयानन्द सरस्वती के परम शिष्य श्यामजी कृष्णा वर्मा ने कानून की पढ़ाई पूरी करने हेतु विनायक को इंग्लैंड भेजने में सहायता की, लंदन 'इंडिया हाउस' क्रांतिकारियों का तीर्थस्थल था। वहाँ जाकर इन्होंने क्रांति के लिए सभाएं की, पर्चे व पुस्तकें बांटनी शुरू कर दी। यदि श्यामजी कृष्ण वर्मा इन्हें विदेश न बुलाते तो ये जल्दी ही गिरफ्तार होने वाले थे। लन्दन में अभिनव भारत की स्थापना की और कुछ ही दिनों में 'अभिनव भारत' भारतीय राजनीति में एक ऐसी शक्तिशाली संस्था बन गयी कि अंग्रेजी सरकार वर्षों तक इसे कुचलने में व्यस्त रही। लंदन के 'इंडिया हाउस में ही वीर सावरकर जी ने मात्र 23 साल की अवस्था में एक पुस्तक

लिखी '1857 का स्वातंर्त्य समर' यह संसार का प्रथम ग्रंथ था जो पूर्ण होने और छपने से पूर्व ही जब्त कर लिया गया। इस ग्रंथ को क्रांतिकारी ढ़ंग से गुप्त रूप से ही छापा गया व इसकी सैकड़ों प्रतियाँ भारत पहुंचाई गयी। इस पुस्तक की खोज में अनेकों उत्साही क्रन्तिकारी युवक रहते थे। भगतसिंह व उनके साथियों ने यह पुस्तक गुप्त रूप से रातों-रात छापकर बांटी थी। लेकिन इन्हीं दिनों इनके भाई गणेश सावरकर को भी एक पुस्तक के प्रकाशित करने के आरोप में देशद्रोही करार देकर काला-पानी की सजा दी गयी। बाद में सावरकर जी को भी 23 सितम्बर, 1910 को आजीवन कारावास व काला-पानी की सजा सुनाई गयी, वे संसार के एकमात्र ऐसे क्रांतिकारी रहे हैं कि जिनको दो बार जीवन के कारावास की सजा सुनाई गई। 31 जनवरी, 1911 में उन्हें अंडमान भेज दिया गया। वहाँ उनके साथ निर्मम व्यवहार किया गया। तेल निकालने के लिए उन्हें कोल्हू के बैल की तरह जोता जाता था। छोटी-छोटी कोठरिया थीं। पीने के लिए 3 मग काला-कड़वा पानी मिलता था। इनके कष्टों को लिखते हुए भी हाथ काँप उठते है। शायद ही अन्य किसी क्रांतिकारी महापुरुष ने इतने कष्ट सहे होंगे वह भी इतने लंबे समय तक। उनके भाई गणेश सावरकर भी इसी जेल में थे। दुख की

– *शेष पृष्ठ 6 पर*

ओ३म्
दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के तत्त्वावधान में
16वां आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह
सम्पन्न
(विस्तृत रिपोर्ट अगले अंक में)

आर्यसमाज जहांगीरपुरी का 39वां वार्षिकोत्सव एवं नए भवन का उद्घाटन समारोह

रविवार 11 मार्च, 2018 यज्ञ : 9 बजे उद्घाटन प्रात:11 बजे

आप सभी को विदित ही है कि आप सभी के सहयोग से आर्यसमाज जहांगीर पुरी नई दिल्ली के लिए नया स्थान क्रय किया गया था, जिसका उद्घाटन महाशय ध र्मपाल जी के कर-कमलों से 11 मार्च, 2018 को किया जाएगा। समारोह की अध्यक्ष सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी करेंगे। मुख्य अतिथि श्री सुभाष आर्य जी होगे तथा ध्वजारोहण निगम पार्षद श्री सुरेन्द्र खर्ब जी करेंगे। आशीर्वाद स्वामी प्रणवानन्द जी प्रदान करेंगे। कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ से होगा। आर्य जन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें एवं भवन निर्माण में अपना सहयोग प्रदान करें।

– विनय आर्य, सभा महामन्त्री रामभरोसे आर्य, मन्त्री, आर्यसमाज

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
दिल्ली की सभी आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से
आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य)
के तत्त्वावधान में
नव सम्वत्सर 2075 की पूर्व संध्या के अवसर पर
144 वाँ आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह
चैत्र अमावस्या विक्रमी सम्वत् 2074, तद्नुसार
शनिवार, 17 मार्च, 2018
स्थान - मावलंकर हॉल, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001

कार्यक्रम
यज्ञ .... दोपहर: 1.30 से 2.45 तक
दीप प्रज्वलन .... दोपहर: 2.43 से 3.00 तक
सार्वजनिक सभा .... दोपहर: 3.00 से 6.00 तक
इस अवसर पर वैदिक विद्वानों एवं आर्य कार्यकर्त्ताओं को स्मृति पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जायेगा।
'एक रूपीय यज्ञ' की प्रस्तुति में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले याज्ञिकों को सम्मानित किया जायेगा।
शान्ति पाठ एवम् प्रसाद वितरण
परिवार एवं इष्ट मित्रों सहित पहुँच कर कार्यक्रम को सफल बनायें
निवेदक
महाशय धर्मपाल, प्रधान, 011-25937341
सुरेन्द्र कुमार रैली, वरिष्ठ उपप्रधान, 9810855695
अरुण प्रकाश वर्मा, कोषाध्यक्ष, 9810086759
सतीश चड्डा, महामन्त्री, 9540041414
संरक्षक : रामनाथ सहगल, मदन मोहन सलूजा, ठाकुर विक्रम सिंह, श्री ओम प्रकाश घई, श्री सतपाल भरारा
उपप्रधान : विक्रम नरुला, उषा किरण आर्य, राजेन्द्र दुर्गा, कीर्ति शर्मा, अजय सहगल
मन्त्री : योगेश आर्य, जोगेन्द्र खट्टर, हरिओम बंसल, एस. पी. सिंह, राजीव चौधरी

वेद-स्वाध्याय

आत्मानन्दरस-पान

न घा त्वद्रिगप वेति मे मनस्त्वे इत् काम पुरुहूत शिश्रिय।
राजेव दस्म नि षदोऽधि बर्हिष्यस्मिन्त्सु सोमेऽवपानमस्तु ते।। - अथर्व. 20/17/2
ऋषिः **कृष्णः।।** देवता - **इन्द्रः।।** छन्दः **जगती।**

शब्दार्थ - (हे इन्द्र) मे = मेरा **त्वद्रिक् मनः** = तेरी ओर गया मन **न घ अपवेति** = अब कभी लौटता नहीं, तुझसे हटता नहीं, **पुरुहूत** = हे बहुतों से पुकारे गये! **कामम्** = अपनी सब इच्छा, मनोरथ, कामना को **त्वे इत्** = तुझमें ही **शिश्रिय** = मैंने आश्रित कर दिया है। **दस्म** = हे दर्शनीय! हे परमसुन्दर! तू **राजा इव** = राजा की भांति **बर्हिषि अधि** = मेरे हृदयासन पर **निषदः** = बैठ जा **अस्मिन् सुसोमे** = इस उत्तम सोम आत्मा में अब **ते** = तेरा **अवपानं अस्तु** = अवपान हो, उतरकर पीना हो।

विनय- हे देव! मैंने संसार में बहुत विहार किया, बहु इच्छाएं-कामनाए पाली, बहुत भटका, परन्तु जबसे मेरा मन तेरी ओर गया है, जबसे शास्त्रश्रवण द्वारा तेरे एक सच्चे भक्त (गुरु) द्वारा तेरे स्वरूप की एक झांकी मुझे मिली है, तबसे मेरा मन मुग्ध होकर ठहर गया है। हे दर्शनीय! तुझे देखकर मैंने सब-कुछ पा लिया है। जिस प्यारे अमर तत्त्व को न पा लेने से सब व्याकुलता थी, वही पा लिया है। तेरे स्वरूप की झांकी ने मुझे ऐसा मोहित कर लिया है कि अब मेरा मन हे परमसुन्दर! तुझसे तनिक देर को भी हटना नहीं चाहता है। मैं अब अन्य किस वस्तु की कामना करूं? मेरी सब इच्छा, कामना, अभिलाषा, मनोरथ, सबका तू ही एक आश्रय हो गया है। अब मुझ में दीखने वाली कुछ स्वाभाविक कामनाएं भी जिसमें अवलम्बित हैं, वह एक तेरी ही कामना रह गई है। हे मेरे हृदय को सब अन्य कामनाओं से शुद्ध कर देने वाले देव! अब तुम मेरे इस निष्काम हृदयान्तरिक्ष को अपने इस मुग्ध करने वाले दृश्यमान स्वरूप से परिपूर्ण कर दो, मेरे अनतःकरण के आसन पर आ विराजो। राजा की भांति मेरे हृदय के सिंहासन पर आरूढ़ हो जाओ। हे अभीष्ट देव! तुम मेरे हृदय के शासक, नियन्त्रक, राजा, स्वामी हो जाओ। हे समस्त प्रजाओं द्वारा पुकारे गये पुरुहूत! मेरे महाभाग्योदय से जब तुम मुझे एक बार मिल गये हो तो मैं तुम्हें क्यों गंवा दूं, अतः अब तुम मुझमें स्थिर हो जाओ, आ बैठो। हे दर्शनीय! तुम्हें एक बार देख लेने पर अब मैं तुम्हें आंखों से क्षणभर के लिए भी ओझल नहीं करना चाहता। अतएव कहता हूं कि इस मेरे हृदय को अपना निवास स्थान बना लो। हे 'रसेन तृप्त'! तुम अपने परिपूर्ण स्वरूप के सोमरस से सदा ही तृप्त हो, मैं तुम्हें अपने हृदय में निमन्त्रित करके क्या सुख दे सकूंगा? परन्तु नहीं, मेरा भक्त मन कहता है तुम्हें भी विशुद्ध हुई आत्मा को देखकर सुख-तृप्ति मिलती होगी, अतः तुम मेरे हृदय में बैठकर मेरे शुद्ध हुए, उत्तम हुए आत्मा से स्वभावतः निकलनेवाले भक्तिरस का-सुसोम का-आस्वादन करो। अपने उच्च सिंहसान से उतरकर मेरे इस तुच्छ पान को ग्रहण करो। मेरा यह कामना-मल से रहित हुआ निर्लेप आत्मा तुम्हारा सोम होकर सर्वभाव से तुम्हें समर्पित है, तुम इसे ग्रहण करो, स्वीकार करो, अपना लो।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

आर्यसमाज द्वारा घोषित 'अंधविश्वास निरोधक वर्ष-2018' पर विशेष

क्या बिन बेटे मोक्ष नहीं.....?

....अंधविश्वास की नगरी में पितरों का उद्धार करने के लिए पुत्र की अनिवार्यता मानी गई है। गरुड़ पुराण के अनुसार, ऐसी मान्यता है कि पुत्र के हाथों पिंडदान होने से ही प्राणी मोक्ष को प्राप्त करता है। पुराण के अनुसार, मोक्ष से आशय है पितृलोक से स्वर्गगमन और वह पुत्र के हाथों ही संभव है। इस वजह से हमारे समाज में एक धारणा बनी हुई है कि प्रत्येक माता पिता के एक लड़के का जन्म तो होना ही चाहिए....

कर्नाटक में चिक्कबल्लापुरा जिले के एक गांव में बेटा नहीं होने से दुखी एक महिला ने अपनी तीन नाबालिग बेटियों के साथ कथित रूप से कुएं में कूद कर खुदकुशी कर ली। हनुमंतपुरा गांव में 25 वर्षीय नागाश्री ने अपनी तीन बेटियों नव्याश्री, दिव्याश्री और दो महीने की एक बेटी के साथ अपनी जान दे दी। नागाश्री की लंबे समय से बेटे की चाहत थी और बेटे को जन्म नहीं देने की वजह से वह दुखी रहती थी। हालाँकि बताया जा रहा की नागाश्री पर कोई पारिवारिक दबाव नहीं था लेकिन सामाजिक दबाव न हो इससे इंकार भी नहीं किया जा सकता। इस तरह के अधिकांश मामलों में कोई न कोई एक ऐसा दबाव जरूर होता हैं जिसके कारण इन्सान आत्महत्या जैसे कदम उठाने को मजबूर हो जाता है।

दरअसल भारतीय समाज में जितने भी दुःख है अधिकांश दुःख की जड़ का मूल अशिक्षा और अन्धविश्वास है। कई बार इन्सान भले ही अंधविश्वास से बचना भी चाहे लेकिन हमारे इर्द-गिर्द जमा समाज उसकी ओर धकेल ही देता है। नागाश्री का मामला भले ही पुलिस के लिए केस, उसके परिवार के विपदा और समाज के लिए एक खबर हो। पर यह तीनों चीजें एक ही सवाल छोड़ती नज़र आती हैं जो हमेशा से समाज के गले में डाला गया है कि 'बेटे के हाथों पिंडदान न हो तो मोक्ष नहीं मिलता। जब तक चिता को बेटा मुखाग्नि नहीं देता, आत्मा को मुक्ति नहीं मिलती।' आज भी हमारे देश की जनसंख्या का एक बहुत बड़ा हिस्सा मोक्ष के जाल में उलझा हुआ है। मोक्ष यानी आत्मा का जन्मजन्मांतर के बंधन से मुक्त होकर परमात्मा में विलीन हो जाना।

अंधविश्वास की नगरी में पितरों का उद्धार करने के लिए पुत्र की अनिवार्यता मानी गई है। गरुड़ पुराण के अनुसार, ऐसी मान्यता है कि पुत्र के हाथों पिंडदान होने से ही प्राणी मोक्ष को प्राप्त करता है। पुराण के अनुसार, मोक्ष से आशय है पितृलोक से स्वर्गगमन और वह पुत्र के हाथों ही संभव है। इस वजह से हमारे समाज में एक धारणा बनी हुई है कि प्रत्येक माता पिता के एक लड़के का जन्म तो होना ही चाहिए। जिसके बेटा नहीं होता उसे अभागा तक समझा जाता है। लड़के की यह चाहत न चाहते हुए भी परिवार में संतानों की संख्या और देश की जनसंख्या बढ़ा रही है जो बाद में देश में बेरोजगारी बढ़ाने और साथ ही एक सामान्य आय वाले परिवार की आर्थिक स्थिति को बिगाड़ने का काम करती है।

पिछले कुछ सालों में भले ही कानून के डंडे के डर से ''शर्तिया लड़का ही होगा'' वाले हकीम भूमिगत होकर अपना व्यापार चला रहे हों लेकिन पांच-सात साल पहले तक सड़कों के आसपास दीवारों, चौराहों, खेतों में बने ट्यूबवेल के कमरों, आदि पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा होता था ''शर्तिया लड़का ही होगा मिले श्रीराम औषधालय घंटाघर मेरठ'' हालाँकि ये व्यापार अभी पूर्णतया बंद नहीं हुआ अभी भी लड़का पैदा करने के कई नुस्खे भी काम में लिए जाने लगे हैं। शातिर लोग तो इस चीज के विशेषज्ञ बने बैठे हैं और बड़े-बड़े पढ़े लिखे लोग लड़के की चाहत में इनकी सेवाएं लेने से नहीं चूकते।

जबकि इनका खेल केवल संभावना के सिद्धान्त के आधार पर चलता है। जब इनकी दवा के प्रयोग के बाद लड़का पैदा हो जाता है तो यह उसे एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करते हैं। मोटी रकम वसूल करते है और जब परिणाम विपरीत आता है तो दवा के प्रयोग करने में गलती होना बताकर या उसकी किस्मत खराब बताकर सारा दोष प्रयोग करने वाली महिला का बता देते हैं। जब सब प्रयासों के बाद भी लड़का पैदा नहीं होता तो महिला अपने आपको कोसती है और कई बार तो कुछ कर्नाटक की नागाश्री जैसे भी कदम उठा देती है।

आप किसी से भी पूछिए कि आखिर लड़का होना क्यों जरूरी है? तो इस प्रश्न के ये जबाब कुछ यूँ मिलेंगे कि साहब लड़के से ही वंश चलता है, लड़का बुढ़ापे का सहारा होता है लड़की तो पराई होती है आदि-आदि रटे रटाये जवाब मिलते हैं। जबकि मेरे एक दूर के रिश्तेदार ने लड़के की चाहत में 6 लड़कियां पैदा कि बाद में एक लड़का हुआ लेकिन वह लड़का आज नशे, चोरी आदि में लिप्त है और उन बूढ़े माँ-बाप की देखभाल लड़कियां ही कर रही हैं। किसके यहाँ लड़का पैदा होगा और किसके यहाँ लड़की इसका निर्धारण हमारे वश में नहीं है और न ही इस बात की कोई गारन्टी है कि जिसके यहाँ बेटा है उसकी जिंदगी सुखी है और बेटी वाला दुखी है। जो चीज हमारे वश में न हो उसके लिए कभी विचार नहीं करना चाहिए और जो प्रकृति से हमें मिला है उसका आनन्द लेना चाहिए।

अलबत्ता तो मृत्यु के बाद मोक्ष की अवधारणा ही कल्पना मात्र है और इस के लिए भी पुत्र की अनिवार्यता महज अधविश्वास द्वारा फैलाया गया भ्रमजाल है। ऐसा कोई काम नहीं जो पुत्र कर सके और पुत्री नहीं। आखिर हैं तो दोनों एक ही माता-पिता की संतान। पर यह समझाया जाता है कि बेटे पर अपने उन पितरों का ऋण है जो उसे इस दुनिया में लाए थे। यह भी कि यह ऋण उतारना उसकी नैतिक जिम्मेदारी है वरना उस के पूर्वजों की अतृप्त आत्माएं भटकती रहेंगी। मगर पुत्र ही क्यों? पुत्री भी तो इन्हीं पूर्वजों द्वारा संसार में लाई गई हैं तो पितृऋण तो उस पर भी होना चाहिए। अंधविश्वास ने मृत्यु के बाद का एक काल्पनिक संसार रच दिया है। जबकि इस देश में बहुतेरे ऋषि, मुनि, धर्म ज्ञाता ऐसे भी हुए हैं जिनको संतान नहीं थी क्या वे सब मोक्ष के अधिकारी नहीं हैं? आखिर किसने चिता के बाद की दुनिया देखी है? ''कौन दावे से कह सकता कि मरने के बाद क्या होता है?'' लेकिन फिर भी पुत्र पैदा करने के लिए मानसिक दबाव बनाया जाता है। जिस कारण कोई महिला तांत्रिकों की हवस शिकार बनती है तो कोई मौत का?

- सम्पादकीय

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

क्यों शरियत के खिलाफ हुई खातून

....आज का इस्लामिक गणतन्त्र ईरान जो कभी आर्यों के पर्शिया एवं फारस के नाम से भी जाना जाता था। ईरान के पैगंबर जरतुश्त के सुधारों से पहले ईरानियों का जो धर्म था वह वैदिक था बाद में जरतुश्त ने ईरानी धर्म को जो नया रूप पारसी नाम से दिया इसके हर पहलू से यह स्पष्ट है कि वह वैदिक धर्म के परिवार का हिस्सा है। आर्यों के मूल धर्मग्रंथ वेद और जरतुश्त की पुस्तक अवेस्ता दोनों एक ही घोषणा करती है कि ईश्वर निराकार है।....

गुजरता दिसम्बर 2017 ईरान की राजधानी तेहरान में एक 19 महीने के बच्चे की माँ 30 वर्षीय ''विदा मुव्हैद'' राजधानी तेहरान की व्यस्त सड़क के ऊपर खड़ी हुई थी और हिजाब को लहरा रही थी। जिसे ईरान में सभी महिलाओं को कानून द्वारा पहनना आवश्यक है। उसके खुले बाल जैसे उसके कपड़ों से खेल रहे थे। फिर उसने एक सफेद स्कार्फ को एक छड़ी के साथ बांध दिया और व्यस्त रास्ते पर घूमते हुए, चुपचाप उसे झंडे की तरह लहराया। वह एक घंटे तक इसे अकेले लहराते रही। इसके बाद उसे इस अपराध में गिरफ्तार कर लिया गया। लेकिन अनिवार्य हिजाब से लड़ रही ईरानी महिलाओं के बीच विदा मुव्हैद, का स्वागत एक नायिका के रूप में किया गया। विदा मुव्हैद की गिरफ्तारी दुनिया भर में खबर बनी। जिसके बाद एक और ईरानी कार्यकर्ता, नरग्स होसेनी को 30 जनवरी और फरवरी माह में एक साथ 29 महिलाओं को इस अपराध में गिरफ्तार किया गया। इस्लामिक गणराज्य ईरान में इस्लामिक ड्रेस कोड को देखने में विफल महिलाओं को दो महीने तक जेल भेजा जा सकता है या करीब 100 डॉलर का जुर्माना लगाया जा सकता है।

इस आन्दोलन से प्रशासन और प्रदर्शनकारियों के बीच हिंसा भी हुई। जो बाद में ऑनलाइन आंदोलन 'मेरी छुपी हुई आजादी' की शुरुआत बन गयी, जिसमें सार्वजनिक स्थानों पर बिना किसी सिर वाले लोगों के चित्रों को पोस्ट करने के लिए ईरान में महिलाओं को आमंत्रित करने वाला एक ऑनलाइन आंदोलन बना। दरअसल परम्पराओं की बेड़ियों को तोड़ने को बेताब प्रदर्शनकारी, मौलवियों को सत्ता से बेदखल सिर्फ इसलिए भी करना चाहते हैं कि उनकी दैनिक जीवन शैली से कट्टर इस्लामिक फरमान राजनितिक तौर पर खत्म हो।

शरियत कानून के अनुसार, यौवन की उम्र से ऊपर की सभी महिलाओं को सिर ढ़का होना चाहिए। यह मुद्दा व्यापक रूप से प्रतिध्वनित है और ईरान के राजनीतिक इलाके में चर्चा पैदा कर रहा है कि कैसे जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा प्रतिबंध के बारे में नाखुश है, न कि केवल हिजाब के बारे में, बल्कि महिलाओं की समानता के बारे में भी नाखुश है।

आज का इस्लामिक गणतन्त्र ईरान जो कभी आर्यों के पर्शिया एवं फारस के नाम से भी जाना जाता था। ईरान के पैगंबर जरतुश्त के सुधारों से पहले ईरानियों का जो धर्म था वह वैदिक था बाद में जरतुश्त ने ईरानी धर्म को जो नया रूप पारसी नाम से दिया इसके हर पहलू से यह स्पष्ट है कि वह वैदिक धर्म के परिवार का हिस्सा है। आर्यों के मूल धर्मग्रंथ वेद और जरतुश्त की पुस्तक अवेस्ता दोनों एक ही घोषणा करती है कि ईश्वर निराकार है।

ईरान के इन प्रदर्शनों में कुछ लोगों के हाथ में पोस्टरों पर लिखा था कि हम आर्यन है शायद इस्लामी कट्टरता से ऊबे हुए लोग अपने मूल धर्म की मांग भी कर रहे हैं। कहा जाता है आज से तीन हजार वर्ष पूर्व ईरानी अपने को आर्य कहते थे। अवेस्ता में भी उन्हें आर्य कहकर पुकारा गया है। प्रसिद्ध ईरानी सम्राट् दारा (521-485 ई.पू.) ने अपनी समाधि पर जो शिलालेख अंकित करवाया है उसमें अपने को आर्यों में आर्य लिखा है। छठी शताब्दी के ईरान के सासानी सम्राट भी अपने को आर्य कहते थे। ईरानी देश को आर्याना या आईयाना कहते थे, जिसका अर्थ है आर्यों का निवास स्थान प्रचलित ईरान शब्द इसी आर्याना का अपभ्रंश है।

इससे साफ हैं कि आर्यों के बाद इस्लाम के आगमन से पहले ईरानी पारसी रहे थे। छठी शताब्दी के बाद यहाँ इस्लाम आया और ईरान की जनता पर इस्लाम की परम्पराओं का बोझ डाल दिया गया। शासन की सभी धार्मिक और राजनीतिक शक्तियां अन्य इस्लामिक राष्ट्रों की तरह मौलवियों के इशारों पर चल पड़ी। इसके बाद 70 के दशक के अंत में इस्लामी धर्मगुरु अयातुल्ला खामनेई के नेतृत्व हुआ, जिसे ईरानी क्रांति भी कहा जाता है। इस क्रांति से धार्मिक इमाम अयातुल्ला खामनेई को सत्ता मिली लेकिन वर्षो से घुटन भरी संस्कृति में जकड़े ईरानी समुदाय को क्या मिला? बस महिलाओं को बुर्का-हिजाब और पुरुषों को दाढ़ी, टोपी या इसे दूसरे शब्दों में कहे तो इस्लामिक कानून शरियत।

इसी वजह से हाल के प्रदर्शनों से घबराई ईरानी सरकार ने वहां अंग्रेजी भाषा को प्रतिबंधित किया गया क्योंकि ईरानी सरकार को यह भी डर है कि सड़कों पर धार्मिक आजादी मांग रहे लोगों के बीच पश्चिमी भाषा के साथ मेलजोल उनकी संस्कृति के प्रति विरोध का भाव पैदा कर रही है उनका मानना है कि अमेरिकी संस्कृति का भाषाई में प्रवेश ईरान में हो रहा है और अयातोला खोमैनी की नजर में यह खतरा है।

ईरान इस्लामी गणराज्य है, जिसने हिजाब को एक महत्वपूर्ण मुद्दा बनाया है। क्या इस्लाम से जुड़े लोग महिलाओं के बाल और शरीर से इतने पागल हो जाते हैं कि उन्होंने महिलाओं के कपड़ों को नियंत्रित करने के लिए कानून बनाने के लिए लाखों डॉलर खर्च किए हैं? यदि अपनी सोच दुरुस्त कर लेते तो शायद इतने खर्चीले कानून बनाने की जरूरत न होती। दूसरा महत्त्वपूर्ण सवाल यह भी है कि क्या ईरानी समाज अनिवार्य हिजाब से दूर रहने के लिए तैयार है या ऐसा करने से क्या महिलाओं को सड़क के उत्पीड़न और हिंसा में वृद्धि होगी? शायद महिलाओं को यह तय करने के लिए खुद तैयार करें कि क्या पहनना है और स्वयं को सुरक्षा के लिए खुद को कैसे ढ़का जाए। सवालों की गठरियों से ईरान के सुधारकों और सत्ता के केन्द्रों के बीच शुरुआती धर्मिक विभाजन शुरू हो गया है। ईरानी लेखक होसेन वाहदानी ने कहा है युवाओं को तानाशाही से इस जमीन की मुक्ति की चाबी रखने का यह प्रयास कितना गौरवशाली और सार्थक होगा अब इसका फैसला युवा ही करेंगे। आखिर कब तक 1400 सौ वर्ष पहले बने कानूनों से आज के आधुनिक युवा और महिलाएं हांके जायेंगे?

-राजीव चौधरी

बोध कथा

तीन प्रकार के मनुष्य

गतांक से आगे -

बीरबल झुककर बोले-'श्रीमन्! यह तो साधारण-सी बात है। मैं ला दूंगा ये सब-के-सब, परन्तु श्रीमान् यदि आज्ञा दें तो कल उपस्थित कर दूंगा उन्हें।'

महाराज ने कहा-'कल तक ही सही, परन्तु उन्हें उपस्थित करो अवश्य।'

दूसरे दिन प्रात: बीरबल गये यमुना तट पर। यमुना के किनारे कितने ही राजा-महाराजाओं के तम्बू लगे थे। दूर कुछ साधु भी अपनी धूनी रमाये प्रभु-भजन में मग्न थे। बीरबल ने दो राजाओं के पास जाकर कहा- 'आपको महाराज अकबर ने बुलाया है, मेरे साथ चलो!'

तब दो साधुओं से प्रार्थना की- 'महाराज अकबर आपका दर्शन करना चाहते हैं। आप कृपा करके मेरे साथ चलिये!'

चारों को साथ लेकर चांदनी चौक में पहुंचे तो दो दुकानदारों को उठा लिया; बोले-'मेरे साथ चलो, महाराज की राजसभा में जाना होगा।'

उन छ: व्यक्तियों को साथ लेकर सभा में पहुंचे तो महाराज ने कहा-'क्यों बीरबल! हमारे प्रश्न का उत्तर मिल गया?''

बीरबल बोले-'हां महाराज! आपके प्रश्न का उत्तर मैं साथ लाया हूं।'

दरबारियों ने उन व्यक्तियों की ओर आश्चर्य से देखा कि ये व्यक्ति राजा के प्रश्न का उत्तर कैसे हुए? यह वे समझ नहीं सके। परन्तु बीरबल ने कहा - 'महाराज! आपने कहा था- दो अबके लाओ। ये दो राजा हैं, यही दो अबके हैं। पिछले जन्म में इन्होंने तप किया, दान किया, पुण्य किया, उसका फल अब भोग रहे हैं, ये अबके हैं और ये दो साधु-ये तबके हैं। आज ये तप कर रहे हैं, लोक-सेवा कर रहे हैं, प्रभु-भजन करते हुए कष्ट सहन कर रहे हैं। इन्हें सुख मिलेगा आगे चलकर। ये तबके हैं।''

राजा ने शेष दो व्यक्तियों की ओर देखकर पूछा- 'और ये?'

बीरबल ने कहा- 'ये दोनों दुकानदार हैं। ये न अबके है, न तबके हैं। ये न पहले तप कर पाये, न अब करते हैं इनके लिए न आज सुख है, न भविष्य में होगा।'

अब तुम सोच लो अपने लिए कि तुम किससे सम्बन्धित हो। अबके हो, तबके हो अथवा उनमें से हो, जो न अबके हैं, न तबके हैं। यदि अन्तिम बात है, तो कृपा करके ऐसा न करो! प्रभु-कृपा प्राप्त करने का यत्न करो।

- महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती
साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली की आर्यसमाजों ने सार्वजनिक रूप से यज्ञ, साहित्य वितरण, भण्डारा, ऋषि लंगर, शोभायात्रा, भजन संध्या/काव्य संध्या, शुभकामना बैनर आदि लगाकर सैंकड़ों स्थानों पर मनाया महर्षि जन्मोत्सव

आर्यसमाज डोरी वालान किशनगंज, दिल्ली द्वारा प्रसाद वितरण

आर्यसमाज गांधी नगर द्वारा सार्वजनिक यज्ञ का आयोजन

आर्यसमाज आनन्द विहार एल ब्लाक हरि नगर द्वारा सार्वजनिक यज्ञ, साहित्य एवं प्रसाद वितरण

सूरीनाम से पधारी सुश्री चिकिता रामवतार का सभा कार्यालय में स्वागत

आर्यसमाज करोल बाग, नई दिल्ली की ओर से किया गया प्रसाद वितरण

आर्यसमाज कीर्ति नगर ने सजाया भवन

आर्यसमाज सागरपुर ने निगम पार्षद को भेंट किया सत्यार्थ प्रकाश एवं कार्यालय में लगाया महर्षि दयानन्द का चित्र

आर्यसमाज सुन्दर विहार ने किया सार्वजनिक यज्ञ एवं प्रवचन

आर्यसमाज स्टेशन रोड मुरादाबाद में सार्वजनिक जन सभा

आर्यसमाज विवेक विहार द्वारा साहित्य एवं प्रसाद वितरण और जन्मोत्सव प्रचार

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र

सत्य की राह Vedic Path to Absolute Truth

मात्र 30/- रु. हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध

प्राप्ति स्थान : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. नं. 9540040339

दिल्ली सभा का व्हाट्एप्प : आओ जुड़ें - साझा करें विचार

व्हाट्सएप्प पर
आर्य समाज से जुड़ें
हमारा नंबर Save करें
9540045898
अपना नाम City और Yes लिख कर भेजें

नोट – हमारा नंबर Save करने के बाद ही आप Message रिसीव कर पाएगें।

हमें बोध कब होगा .....?

....महर्षि ने हमें एक ऐसा मार्ग दिखा दिया जो वर्षों से अन्धकार में छिपा दिया गया था। अपनी समर्थ्य, योग्यता और पूर्ण समर्पण से महर्षि ने उस पर स्वयं चलना प्रारम्भ किया, सफर लम्बा था, पूरा सफर तो नहीं कर पाये किन्तु जितना किया वह संसार के लिए आश्चर्य बन गया। शेष कार्य हमें पूरा करना था। हम उसके उत्तराधिकारी हैं, वारिस हैं हम पर ही उसके कार्य को पूर्ण करने की सारी जवाबदारी है।....

सारी दुनिया से न तो महर्षि का परिचय हुआ, ना ही महर्षि के उद्देश्यों को वे समझ सके इसलिए ऐसे अपरिचित व्यक्तियों के संबंध में तो सोचना भी क्या?

मैं उन महानुभावों के संबंध में सोच रहा हूँ जो महर्षि का अपने को अनुयायी कहते हैं। गुरुवर दयानन्द के नाम की जय बोलते हैं ऋषि बलिदान दिवस, जन्मोत्सव और बोधरात्रि धूमधाम से मनाते हैं।

महर्षि के कार्यों से, उनके उद्देश्यों से आत्मिक संबंध रखने वाले देश-विदेश में बड़ी संख्या में सदस्य हैं। इतनी बड़ी संख्या व विस्तार होने के पश्चात् भी ऋषि की भावना को, उनके कार्यों को वह गति नहीं मिल रही, वह अधूरे सपने पूरे नहीं हो पा रहे जो अब तक हो जाना चाहिए था।

किसी भी कार्य की सफलता में तन-मन-धन आधार होता है। कहीं तन का, कहीं मन का, कहीं धन का महत्त्व कार्य के स्वरूप के अनुसार निश्चित होता है। किन्तु तन और धन के अतिरिक्त मन सबसे महत्वपूर्ण है, यदि मन नहीं है तो कोई संकल्प नहीं हो सकता, कोई संकल्प नहीं तो किसी कार्य में पूर्ण समर्पण नहीं हो सकता और बिना समर्पित भाव से किया कोई भी प्रयास मात्र औपचारिकता तक सीमित रह जाता है, जिसका ऊपरी रूप कुछ होता है और आन्तरिक कुछ और।

आर्य समाज की स्थापना उन उद्देश्यों को लेकर की गई थी जिनका अभाव समाज को दु:ख, सन्ताप, अशान्ति, भय के दावानल में ले जा रहा था। असत्य को सत्य से अधिक महत्त्वपूर्ण बताया जा रहा था। धार्मिक मान्यतायें अन्धविश्वास, कुरीतियों के नीचे दब रही थीं मानवता पर कुछ तथाकथित वर्ग ने अपने अधिकारों का दायरा बढ़ाते हुए दूसरे वर्ग को उपेक्षित, न केवल उपेक्षित अपितु प्रताड़ित, अपमानित कर विधर्मी होने पर मजबूर कर रहे थे। ऐसे समय में आर्य समाज की स्थापना हुई।

महर्षि को हुआ बोध उसकी प्रसन्नता के ढ़ोल बजा बजाकर अपने को गौरवान्वित कर रहे हैं और दूसरों को बोध करवाने में लगे हैं। किन्तु विडम्बना है हमें अपने बोध की चिन्ता नहीं।

मानव समाज का बहुत बड़ा भाग चित्रों, प्रतिमाओं की पूजा से, इमारतों, नदियों से जीवन की पवित्रता व सफलता मान रहा है। दर्शन लप्त है प्रदर्शन ही जीवन का उद्देश्य बनकर सिमिट गया है। इसकी निन्दा, कटाक्ष हम करने में चूकते नहीं हैं। किन्तु हम कहाँ खड़े हैं ?

दयानन्द की जय, आर्य समाज के 10 नियमों की श्रेष्ठता का, तर्क के दौरान उदाहरण, संसार के सर्वोत्तम ईश्वरीय ज्ञान की दुहाई बस! क्या महर्षि के कार्यों को इतना कुछ आगे बढ़ायेगा?

महर्षि को बोध हुआ जिससे जीवन परोपकारी, ईश्वर के प्रति अटूट विश्वासी, ज्ञानमय, निर्भीक, त्यागी, सत्याचरण से पूर्ण, तपस्वी, सर्वहिताय, राष्ट्र समर्पण की भावना से पूर्ण था।

हम किसका अनुसरण कर रहे हैं ऋषि का या किसी अन्य दलगत निकृष्ट विचारधारा का? आलस्य, प्रमाद, स्वार्थ से लिप्त व्यक्ति महर्षि का अनुयायी कदापि नहीं हो सकता। ऐसे व्यक्तियों ने ही महर्षि को, आर्य समाज को बदनाम किया, विघटित किया है।

महर्षि ने हमें एक ऐसा मार्ग दिखा दिया जो वर्षों से अन्धकार में छिपा दिया गया था। अपनी समर्थ्य, योग्यता और पूर्ण समर्पण से महर्षि ने उस पर स्वयं चलना प्रारम्भ किया, सफर लम्बा था, पूरा सफर तो नहीं कर पाये किन्तु जितना किया वह संसार के लिए आश्चर्य बन गया। शेष कार्य हमें पूरा करना था। हम उसके उत्तराधिकारी हैं, वारिस हैं हम पर ही उसके कार्य को पूर्ण करने की सारी जवाबदारी है। क्या हममें ऋषि के जीवन का वह समर्पण, लगन, सत्यनिष्ठा का भाव विद्यमान है? यदि नहीं तो औपचारिकता का जीवन कागज के फूल के जैसा है जो दिखता तो सुन्दर है परन्तु न खुशबू, न कोई लाभ। इसीलिए यदि अभी तक अपनी मंजिल से बहुत दूर हैं, अब क्योंकि हमें अभी तक कर्त्तव्य बोध नहीं हो पाया, फिर हमें बोध कब होगा?

भविष्य में ऋषि बोधोत्सव मनाते समय अपने बोध के प्रति भी सजग रहें, तभी ऋषि बोधोत्सव मनाना सार्थक होगा।

- प्रकाश आर्य
मन्त्री, सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली

समाज सेवी अन्ना हजारे को सत्यार्थ प्रकाश भेंट

गायत्री शक्ति पीठ विज्ञाननगर में बुद्धिजीवियों के लिए आयोजित एक कार्यक्रम में आर्य समाज जिला सभा प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा जी की अगुवाई में आर्य समाज के एक शिष्ट मण्डल ने श्री अन्ना हजारे को वेदमंत्रोंच्चार के साथ केसरिया ओ३म् का पटका पहनाकर अभिनन्दन किया व महर्षि दयानन्द सरस्वती रचित अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया। शिष्ट मण्डल में आर. सी. आर्य, प्रधान महावीर नगर, प्रेमनाथ कौशल प्रधान भीमगंज मण्डी, श्रीमती सरिता रंजन गौतम प्राचाग्र डी.ए.वी कोटा, आर्य विद्वान बिरधीचन्द पण्डित रामदेव शर्मा, राधावल्लभ राठौर एवं वेदमित्र वैदिक एवं बनवारी लाल सिंघल उपस्थित थे।

- अर्जुनदेव चड्डा, प्रधान

पुस्तक परिचय

चाहे विकासवादी आधुनिक समय में विकास-नियम के चालू होने को मानते हों व न मानते हों, यह हम जानते हैं कि प्राचीन कालिक, मध्य कालिक व आधुनिक समय में कोई भी ऐसा नमूना इस बात की पुष्टि के लिए नहीं मिलता कि मानवीय जाति-उपजाति (Human species) में परिवर्तन होता है। यदि मनुष्यों की उत्पत्ति बन्दरों द्वारा शनै:शनै: विकास से मान ली जाय तो आगे उनका क्या हुआ?

विकासवादी केवल प्रकृति को सृष्टि का कारण मानते हैं। उनके मत में कललरस (Protoplasm) जीवन का सरलतम रूप है। इसी कललरस की वृद्धि और गुणन से संकीर्ण प्राणियों का विकास होता है। काललरस भौतिक पदार्थ है। उसमें चेतनता कैसे आती है? इस समस्या का समाधान जीव को पृथक् और अनादि मानने से ही होता है। इसी प्रकार के कुछ तर्क-वितर्कों को दर्शाती पुस्तक 'वैदिक दर्शन' की रचना की है

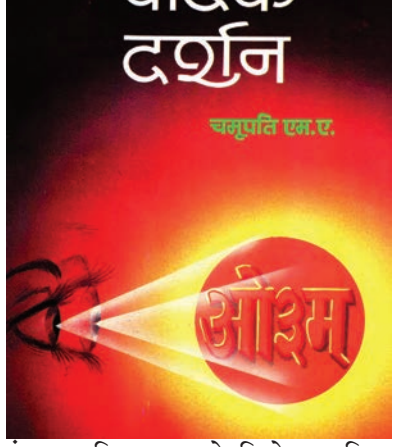

पं. चमूपति एम.ए. ने जिसे प्रकाशित किया है विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द ने। इस पुस्तक को आप अपने इष्टमित्रों, रिश्तेदारों को उनके ज्ञानविकास के लिए किसी भी उत्सव, जन्मोत्सव, में भेंट कर सकते हैं।

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें:-
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001,
मो. नं. 9540040339

मातृशक्ति

सदाचार

सदाचार अर्थात् सत्+आचार। उत्तम आहार और योग्य व्यवहार के द्वारा जिस बल-वीर्य की हमारे शरीर में वृद्धि हुई है। उस बल-वीर्य की सत् अर्थात् सत्ता को अपने शरीर में सुरक्षित तथा स्थिर बनाए रखने के लिए जो आचार अर्थात् आचरण किया जाता है, उसका नाम है-''सदाचार''।

हमने आहार आदि के द्वारा अपने शरीर में बल-वीर्य की वृद्धि तो कर ली। किन्तु यदि उस बल-वीर्य को हम अपने शरीर में सुरक्षित न रख सकें, अर्थात् बुरी सोहबत (कुसंग) में फंसकर अपने अप्राकृतिक साधनों तथा दुर्व्यसनों के द्वारा बल-वीर्य को नष्ट कर दिया, तो भी हमारा शरीर स्वस्थ और बलवान् नहीं बन सकता। जैसा कि एक मनुष्य की पांच सौ रुपये मासिक आय है। यदि वह पांच सौ के पांच सौ रुपये प्रति मास खर्च कर दे तो वह कदापि धनवान् नहीं बन सकता। अथवा जैसे एक तालाब में पानी आने का भी मार्ग है और जाने का भी। वह तालाब कभी भी पानी से भरा नहीं रह सकता। इसी प्रकार हमारे शरीर में बल, वीर्य के प्राप्त होने का मार्ग होते हुएभी यदि हमने उसके खारिज करने का भी अपनी कुटेवों द्वारा मार्ग बना लिया है, तो भी हमारा शरीर स्वस्थ, बलवान् तथा निरोग नहीं बन सकता। अत: आवश्यकता है कि हम अपने शरीर में से बल-वीर्य के निकलने के मार्ग को रोकें और उसका एकमात्र उपाय है सदाचार।

- आचार्य भद्रसेन
साभार: आदर्श गृहस्थ जीवन

आदर्श गृहस्थ जीवन : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

MDH हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो 5,10,20 किलो की पैकिंग
प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, मो. 9540040339

Veda Prarthana - II
Regveda -1 (B)

God Promotes Virtuous Prosperity and Wealth

- Acharya Gyaneshwarya

गयस्फानो अमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्द्धनः।
सुमित्रः सोम नो भव।।
ऋग्वेद 1/6/21/12

Gayasfano amivaha
vasuvit pushtivardhanah.
Sumitrah soma no bhava.
(Rig Veda 1:6:21)

Continue from last issue-

Third, this mantra states that God is vasuvit which means God resides in and pemeates everything in the universe i.e. God is Omnipresent and Omniscient. God is also called antaryami because He is even present inside our souls and as such, Omniscient God knows perfectly each and every deed of all human beings. God knows everything whether it is at the levels of thoughts (in our minds), words or manifest actions, whether they were done in the past or are currently being done. Thus, God is able to be a perfect Karmphaldata (judge), giving us good or bad rewards based on our actions and not in an arbitrary manner. Even though our souls have free will and we can perform any deeds we chose to perform in the future, but once the deeds are completed God alone will judge us and give appropriate awards.

Fourth, this mantra states that God is pushtivardhanah which means God enhances our good atrivutes, capabilities and prosperity as well as helps us get rid of our deficiencies and shortcomings. We thus achieve success, fulfillment, and perfection in our lives. Although, all of us as individuals have a unique physical body, varying degrees of health strength, wealth and prosperity, yet all of us also feel at least some degree of inferiority, deficiencies and deprivation compared to others and find this feeling leaves us unfulfilled in life. God helps us find fulfillment in life by helping us acquire knowledge, wisdom, strength, harmong, and bliss.

God, in the second line of this mantra is named Soma, which means God is always Benevolent to us as well as that God is the Master of all wealth prosperity, and giver of peace. This segment of the mantra is also a prayer to God to become our Supreme Friend and Guide (Sumitra). In our daily life, our true friends are those who would help us in our hour of needs. Similarly when we make our life truly virtuous and follow God's teachings, then with certainty we become deserving of God's friendship and help to us all the time. God fills us up with virtuous knowledge, wisdom, strength, courage and helps us earn monetary wealth and prosperity. God also helps us get rid of our physical and mental illnesses and makes us healthy and worthy of living a long life. Therefore, as virtuous and thoughtful persons let us come together and do our utmost to make God our Dearest Friend and Closest Entity. May we pray to God again and again to always shower His benevolence upon us and always remain our Closest Companion.

(For God's attributes, also see mantras #)

(For explanations of prosperity in the Vedas also see mantra#)

To Be Continue....

प्रथम पृष्ठ का शेष

विनायक दामोदर सावरकर .....

बात यह थी कि कोई भी क्रांतिकारी आपस में इशारों से भी बात नहीं कर सकता था।

12 वर्ष तक उन्होंने काले-पानी की सजा काटी। चारों ओर से पड़ रहे दबाव के कारण व जमनादास जी के प्रयासों के कारण उनको 10 मई, 1937 को मुक्त कर दिया गया. दो जन्म के काले पानी के दण्ड पाये हुए वीर सावरकर स्वतंत्र हो गए। स्वतंत्र होने के बाद सम्मानपूर्वक काँग्रेस का नेता बनने के बजाय दिसंबर 1937 में अहमदाबाद में हुए हिन्दू महासम्मेलन में 'हिन्दू महासभा' की अध्यक्षता स्वीकार की। हैदराबाद के निजाम द्वारा वहाँ की हिन्दू जनता पर हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध आर्य समाज द्वारा दिसंबर 1938 को आर्य महासम्मेलन में घोषित हैदराबाद का प्रसिद्ध आर्य सत्याग्रह 'धर्मयुद्ध' में वीर सावरकर जी ने हिन्दू सभा की ओर से सर्वाधिकारी बनकर सत्याग्रह में सर्वस्व झोंक कर आर्यों की सहायता की। करीब 12 हजार आर्यसमाजी जुड़ें एवं अन्य 4 हजार लोगों ने निजाम राज्य की जेलों में कष्ट सहे। एक बार वीर सावरकर जी ने महर्षि दयानन्द जी की पुस्तक 'सत्यार्थ-प्रकाश' के बारे में कहा, हिन्दू जाति की ठंडी रगों में उष्ण रक्त का संचार करने वाला ग्रंथ 'सत्यार्थ-प्रकाश' अमर रहे। उनके जीवन काल में ही भारत आजाद हुआ। भारत विभाजन से उनको बहुत ही कष्ट पहुंचा। 1948 में गांधी की हत्या हुई तो उन्हें भी गिरफ्तार किया गया परन्तु उन पर कोई आरोप साबित न होने पर उन्हें रिहा कर दिया गया। भारत ने जब 1965 में ताशकंद समझौते में जीती हुई जमीन वापस देने के लिए जब उन्होंने सुना तो दुखी हृदय से बोल उठे, ''हे मृत्यु! तू मुझे आत्मसात कर ले ताकि मुझे देश की और दुर्दशा न देखनी पड़े.'' वह बीमार रहने लगे। उन्होंने दवा व खान-पान त्याग दिया। 26 फरवरी, 1966 को वीर सावरकर यह नश्वर शरीर त्यागकर चल दिये। देश की आजादी के लिए सही उनकी घोर कष्टकारी यातनाओं को राष्ट्र कभी नहीं भूलेगा। उनका तप, त्याग और राष्ट्रप्रेम सदैव भारतीयों को प्रेरित करता रहेगा। मालाबार दंगे और उन पर लिखी सावरकर की प्रसिद्ध पुस्तक मोपला हर भारतीय को जरुर पढ़नी चाहिए। इस महान क्रन्तिकारी को आर्य समाज का शत-शत नमन।- **आर्य समाज**

20वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 20वां परिचय सम्मेलन का आयोजन 6 मई, 2018 को आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली में प्रात: 10 बजे से किया जाएगा।

समस्त आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम **300/- रुपये** का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **खाता संख्या 910010001816166 IFSC - UTIB0000223 एक्सिस बैंक करोल बाग शाखा** में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेंजे। आवेदन भेजने की **अन्तिम तिथि 26 अप्रैल, 2018** है। इसके बाद प्राप्त आवेदनों को विवरणिका में प्रकाशित नहीं किया जा सकेगा। पंजीकरण फॉर्म पृष्ठ 7 पर दिया गया है तथा **www. thearyasamaj.org** से डाउनलोड किया जा सकता है। आप अपना/अपने बच्चों का पंजीकरण **www.matrimony. thearyasamaj.org** पर ऑनलाईन भी कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चद्दा, राष्ट्रीय संयोजक (मो. 9414187428)
एस. पी. सिंह, संयोजक, दिल्ली (मो. 9540040324)

आओ ! संस्कृत सीखें

पूर्वकालिक कत्वा व ल्यप प्रत्यय (44)

गतांक से आगे....

'चाहिए' अर्थबोधक तव्यत् व अनीयर् प्रत्यय - 'चाहिए' अर्थ को कहने में धातु से तव्यत् व अनीयर् प्रत्यय होते हैं। इनके क्रमश: तव्य व अनीय शेष रहते हैं। ये प्रत्यय कर्मवाच्य व भाववाच्य में होते हैं।

उदाहरण- तेन कार्य कर्तव्यम्। यहां क्रिया अर्थात् धातु में तव्यत् प्रत्यय हुआ है अत: वाक्य का अर्थ हुआ 'उसके द्वारा कार्य किया जाना चाहिए'। इसी प्रकार अनीयर् प्रत्ययान्त शब्दों के प्रयोग होगें।

2. मया लेख: लेखितव्य:।
मेरे द्वारा लेख लिखा जाना चाहिए।

3. लतया अत्र स्थातव्यम्।
लता के द्वारा यहां ठहरा जाना चाहिए।

4. देव्या गानं गातव्यम्।
देवी के द्वारा गान गाया जाना चाहिए।

5. पित्रा तत्र स्नातव्यम्। पिता के द्वारा वहां स्नान किया जाना चाहिए।

6. युष्माभि: पाठ: पठनीय:। तुम सब के द्वारा पाठ पढ़ा जाना चाहिए।

7. भगिन्या हसनीयम्।
बहन के द्वारा हंसा जाना चाहिए।

8. राज्ञा राज्यं पालनीयम्।
राजा के द्वारा राज्य का पालन किया जाना चाहिए।

9. शिष्येण गुरु: सेवनीय: । शिष्य के द्वारा गुरु की सेवा की जानी चाहिए।

10. साधुना इत्थम् आचरणीयम्।
साधु के द्वारा इस प्रकार आचरण किया जाना चाहिए।

- क्रमश: -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग

अल्लाह का इलाज

बरेली में मुसलमान भाईयों का उत्सव था। धर्मवार्ता के लिए देहलवीजी को भी बुला लिया। देहलवीजी ने वहाँ दर्शनों के नामी पण्डित स्वामी दर्शनानन्दजी की युक्ति दी कि अल्लाह तौरेत में कौन-सी बात भूल गया था, जो जबूर में ठीक कर दी? और फिर जबूर के बाद इंजील आई तो जबूर में कौन-सी गलती रह गई थी, जो इंजील में ठीक की गई? और इंजील में कौन-सी चूक रह गई थी, जो कुरआन में ठीक की है? और यह क्रम कहाँ तक चलेगा? आगे अब कौन-सी पुस्तक आएगी, यदि कुरआन में भी कमी रह गई हो?

पण्डितजी के इस प्रश्न पर एक मौलाना मुस्काते हुए खड़े हुए और कहा कि पण्डितजी प्रतीत होता है आपको कभी किसी हकीम (वैद्य) से काम नहीं पड़ा। पण्डितजी ने कहा कि मेरा क्या काम वैद्य से? रोगी को वैद्यों-डाक्टरों से पाला पड़ता है, न कि स्वस्थ मनुष्य को। चलो, कहो, क्या कहना चाहते हैं? मौलाना बोले कि हकीम लोग पेट के रोगी को पहले ऐसी ओषधि देता है जिससे मेदा (अमाशय) नर्म हो जाता है, फिर कोई ऐसी ओषधि देता है जिससे जुलाब लगें और सारा मल निकल जाए।

अल्लाह ने यह पुस्तकें (तौरेत, जबूर, इंजील आदि) देकर उन पुराने मनुष्यों में सत्य के एक ईश्वरवाद के विरुद्ध जितना मल था उसे नर्म कर दिया और जब कुरआन मजीद आया तो जुलाब से सबको कतई निकालकर बाहर फेंक दिया।

पण्डितजी ने उत्तर दिया कि वे लोग (पैरेत, जबूर, इंजीलवाले) जिनका आमाशय तो नर्म कर दिया गया परन्तु जुलाब नहीं दिया गया चिल्ला रहे हैं और वे भी शोर कर रहे हैं जिनकी जुलाब तो दे दिया, परन्तु मेदा नर्म नहीं किया गया। यह क्या ढंग है कि पेट में गड़बड़ एक के हो, अमाशय दूसरे का नर्म किया और जुलाब तीसरे को दिया जाता है।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आर्यसमाज करोल बाग एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में
पं. लेखराम बलिदान दिवस के अवसर पर विचार गोष्ठी
"दलित समाज को हिन्दुओं से अलग करने का राजनैतिक षड़यन्त्र"

आर्यसमाज करोल बाग में अमर बलिदानी पं. लेखराम बलिदान दिवस के अवसर पर दिनांक 4 मार्च, 2018 को विचार गोष्ठी का आयोजन प्रात: 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक किया जा रहा है। विचार गोष्ठी का विषय – **"दलित समाज को हिन्दुओं से अलग करने का राजनैतिक षड़यन्त्र"** है।

गोष्ठी की अध्यक्षता श्री योगेन्द्र चन्दोलिया जी, पूर्व मेयर करेंगे। मुख्य वक्ता डॉ. राजकुमार फुलवारिया जी, प्रो. दिल्ली विश्वविद्यालय एवं डॉ. विनय विद्यालंकार जी होंगे। कार्यक्रम संयोजक श्री कीर्ति शर्मा जी होंगे। कार्यक्रम के उपरान्त सभी उपस्थित महानुभावों के लिए ऋषि लंगर रहेगी। – ***कीर्ति शर्मा, प्रधान***

महर्षि दयानन्द जयन्ती एवं ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान द्वारा संचालित के.एल. महता दयानन्द के विद्यालयों एवं आर्य समाज नेहरू ग्रउण्ड ने युग-प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एवं ऋषि बोधोत्सव धूमधाम से नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से किया गया। तदुपरान्त अध्यक्षा डॉ. विमल महता ने सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया। आचार्य सत्यप्रिय जी के प्रखर विचारों ने श्रोताओं में नव-ज्योति और नव-उत्साह का संचार किया। संस्थान के उपाध्यक्ष सर्वश्री आनन्द महता, जे.सी. आर्य (कोषाध्यक्ष), श्रीमती सरोज गुंबर (सचिव) तथा अन्य वरिष्ठ पदाधिकारियों ने उपस्थित होकर समारोह की गरिमा बढ़ाई। इस अवसर पर अनेक आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। – ***मन्त्री***

महर्षि जन्मोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज खेड़ा अफ़गान के तत्त्वावधान में 10 फरवरी को महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव बड़े धूम-धाम से मनाया गया। यज्ञोपरान्त आर्य समाज प्रधान श्री आदित्य प्रकाश गुप्ता महर्षि के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा 'महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना में अपना स्थान माली का बताया स्वयं उन्हीं के शब्दों में ''मैंने आर्य समाज का उद्यान लगाया है इसमें मेरी अवस्था माली की सी है। पौधों में खाद् डालते समय खाद और मिट्टी माली के सिर पर पड़ ही जाया करती है मुझ पर राख और धूल जितनी चाहे पड़े मुझे इसका कुछ भी ध्यान नहीं परन्तु वाटिका हरी-भरी रहे और निर्विघ्न फूले-फले।'' इस अवसर पर सर्वश्री वेदमुनि, चरण सिंह, वीरेन्द्र कुमार, सुरेन्द्र कुमार, शशिकांत, सोनू कुमार, संयज, कुंवरपाल, श्रवण कुमार, सुमित, वेदभूषण गुप्ता, ब्रह्म सिंह, रवि कुमार, महीपाल आदि ने अपनी मौजूदगी दर्ज कराई।

–***राजेश कुमार आर्य,मंत्री***

पत्रकार चाहिए

महर्षि दयानन्द जी के सिद्धान्तों, मन्तव्यों, आर्यसमाज की मान्यताओं, कार्यों और गतिविधियों को जन सामान्य तक पहुंचाने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को एक सुयोग्य पत्रकार की आवश्यकता है जो प्रिंट, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया तथा सोशल मीडिया के माध्यम से किसी भी गतिविधि को वायरल करा सकने में सक्षम हों। पत्रकारिता में स्नातक/परास्नातक महानुभाव अपना बायोडाटा aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें अथवा सभी सम्बन्धित प्रमाणपत्रों की प्रति के साथ 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 पर भेजें। आर्य महानुभावों को प्राथमिकता। वेतन योग्यतानुसार। – ***महामन्त्री***

विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु साहित्य प्रचार यज्ञ में आहुति देने वाले महानुभावों की सूची

गत प्रकाशित अंक से आगे –

51.	आर्यसमाज हनुमान रोड	21000
52.	आर्यसमाज मानसरोवर पार्क	1100
53.	श्री जगदीश शर्मा जी	1000
54.	श्री प्रवीण कुमार शर्मा जी	500

– ***क्रमश:***

शोक समचार

आचार्य श्री रामदत्त शर्मा का निधन

आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा (उ.प्र.) के आचार्य श्री रामदत्त शर्मा जी का 16 फरवरी 2018 को निधन हो गया। आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा में 25 फरवरी को श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई जिसमें विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने अपने-अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

श्री पी.सी. बक्शी दिवंगत

आर्य समाज बी-2 बसन्त कुंज के प्रधान श्री पी.सी. बक्शी जी का दिनांक 25 फरवरी 2018 को निधन हो गया। 28 फरवरी को आर्य समाज बी-2 बसन्त कुंज में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने अपने-अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। –सम्पादक

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों से निवेदन
1 अप्रैल, 2018 को मनाएं अधिकतम संख्या दिवस

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की सूचनार्थ निवेदन है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिनांक 1 अप्रैल, 2018 को अधिकतम संख्या दिवस आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि इस दिन अपनी-अपनी आर्यसमाज के यज्ञ एवं साप्ताहिक सत्संग में अवश्य ही सम्मिलित हों। समस्त आर्यसमाजों से भी निवेदन है कि इस हेतु अपनी तैयारियां करें। अपनी आर्यसमाज के समस्त सदस्यों को सूचित करें कि इस दिन के सत्संग में सब कार्य छोड़कर अवश्य सम्मिलित हों। इस सम्बन्ध में सभा द्वारा आवश्यक दिशा निर्देश शीघ्र जारी किए जाएंगे। सभा की ओर से सब आर्यसमाजों अपेक्षित सहयोग भी उपलब्ध कराया जाएगा। सबसे अधिक उपस्थिति वाली आर्यसमाज को सभा की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। इस दिन को अपनी आर्यसमाज का ऐतिहासिक दिन बनाएं। अत: अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग की उपस्थिति पंजीका के उस दिन की उपस्थिति की फोटो प्रति अपने पत्र के साथ सभा कार्यालय – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली के पते पर भिजवाना न भूलें। – ***विनय आर्य, महामन्त्री***

दयानन्द बाल शिक्षा योजना के फोल्डर का विमोचन

आर्य समाज जिला सभा कोटा एवं गुरु विरजानन्द पब्लिक स्कूल रोझड़ी द्वारा प्रारम्भ की गई दयानन्द बाल शिक्षा योजना के फोल्डर का यूआईटी कोटा के अध्यक्ष राम कुमार मेहता ने विमोचन किया। योजना के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए निदेशक विनोद सिंह कुशवाहा ने बताया कि इसके अन्तर्गत क्षेत्र के प्रतिभाशाली बालक-बालिकाओं के लिए कक्षा 5वीं एवं 8वीं स्तर पर एक परीक्षा आयोजित की जायेगी इस परीक्षा में चयनित बालक-बालिकाओं को उच्च शिक्षण हेतु अनुदान दिया जायेगा। परीक्षा में विभिन्न विषयों के साथ-साथ नैतिक मूल्यों, आर्य समाज के सिद्धांतों से जुड़े प्रश्नों का समावेश किया जायेगा। योजना का उद्देश्य क्षेत्रीय प्रतिभाओं को तलाश कर उन्हें उचित अवसर प्रदान करना है। – ***प्रधान, कोटा सभा***

पंजीकरण संख्या : ॥ ओ३म्॥ रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

20 वाँ आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15, हनुमान रोड़, नई दिल्ली – 110001 टेलिफैक्स :- 011-23360150, 23365959

Email: aryasabha@yahoo.com website : www.thearyasamaj.org

पंजीकरण प्रपत्र

: व्यक्तिगत विवरण :

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रुप से लगाएं।"

1. युवक/युवती का नाम :..... गोत्र.....
2. जन्मतिथि:..... स्थान : .....
3. रंग..... वजन ..... लम्बाई .....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : .....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/पता/..... .....व्यक्तिगत मासिक आय.....

: पारिवारिक :

6. पिता/सरंक्षक का नाम ..... व्यवसाय: ..... मासिक आय.....
7. पूरा पता:.....

दूरभाष :..... मोबा.:..... ईमेल :.....

8. मकान निजी/किराये का है.....
9. माता का नाम :..... शिक्षा :..... व्यवसाय : .....
10. भाई - अविवाहित.....विवाहित..... । बहिन- अविवाहित.....विवाहित..... ।
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं? (आवश्यक).....
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) .....
13. युवक/युवती यदि इनमें से हो तो सही पर (✓) लगाएं : ☐ विधुर : ☐ विधवा : ☐ तलाकशुदा : ☐ विकलांग :

14. विशेष:

मैं.....घोषणा करता हूँ कि इस फार्म में मेरे द्वारा दी गई समस्त जानकरी एवं तथ्य पूर्णतया सत्य है।

दिनांक : .....

हस्ताक्षर अभिभावक/ प्रत्याशी

कार्यक्रम स्थल :– आर्य समाज, कीर्ति नगर, नई दिल्ली–110015

दिनांक : 6 मई 2018, रविवार। समय :– प्रात: 10 बजे से

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :

श्री अर्जुनदेव तह्डा, राष्ट्रीय संयोजक मो. 09414187428, श्री एस.पी. सिंह, संयोजक- दिल्ली क्षेत्र मो. 09540040324

आर्य समाज, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015

श्री ओमप्रकाश आर्य, प्रधान, मो 09911155285, श्री सतीश तह्डा, मंत्री, मो 09313013123, सुरेश तेजी, कोषाध्यक्ष, मो. 09910167560

नोट : 1. ई-मेल एड्रेस, मोबाईल व फोन नम्बर लिखना आवश्यक है

2. विकलांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क 50% छूट होगी।
3. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी पूर्ण सन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगी।
4. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है।
   यह फार्म ऑनलाइन भी भर सकते है लिंक - matrimony.thearyasamaj.org
5. पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा नई दिल्ली के नाम रु. 300/- (तीन सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिस बैंक खाता सं. 910010001816166 करोल बाग शाखा IFSC-UTIB 0000223 में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15- हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तारीख से 15 दिन पूर्व भेज दें, ताकि प्रत्याशी का विवरण पुस्तिका मे प्रकाशित किया जा सके।
6. माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लावें। कॉलम नं. 11 भरना आवश्यक है।
7. रजिस्ट्रेशन शुल्क 300/- प्राप्त किये जाने पर ही रजिस्ट्रेशन फार्म स्वीकार किया जायेगा।

युवक और युवतियाँ परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें- महर्षि दयानन्द सरस्वती

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 26 फरवरी, 2018 से रविवार 4 मार्च, 2018

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 1/2 मार्च, 2018

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 28 फरवरी, 2018

प्रतिष्ठा में,

वैदिक सेवा आश्रम सिलीगुड़ी का शिलान्यास सम्पन्न

पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ जो भी काम किया जाता है वह अवश्य ही पूरा होता है - महाशय धर्मपाल

धन कमाने की अंधी दौड़ में हम अपनी संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं - डॉ. महावीर

दिनांक 25 फरवरी 2018 को महाशय धर्मपाल चेयरमैन एम.डी.एच. के करकमलों द्वारा पुतीमारी केनल रोड, फुलबाड़ी, (निकट शारदा विद्या मन्दिर), सिलीगुड़ी में वैदिक सेवा आश्रम का शिलान्यास किया गया। मुख्य अतिथि महाशय धर्मपाल जी ने शुभकामनाएं देते हुए विनय आर्य, श्री रामवतार बरेलीया, डॉ. आर. के. अग्रवाल, सावरमल आलमपुरिया, श्री जयसिंह कुण्डलीया एवं श्री चन्द्र प्रकाश सिंहल ने भी अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये। - ***आचार्य***

कहा कि 'पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ जो भी काम किया जाता है वह अवश्य ही पूरा होता है। ऐसे प्राकृतिक वातावरण के बीच आश्रम की स्थापना करने का निर्णय बिल्कुल सही है। निश्चित तौर पर यह सेवा आश्रम मानवता की भलाई की एक मिसाल बनेगा। उन्होंने कहा कि यह पूरी परियोजना मानवता को समर्पित है और इसका उद्घाटन करके मुझे बहुत खुशी हो रही है। महाशय जी ने कहा कि वैदिक गुरुकुल ब्लॉक के निर्माण का पूरा खर्च एम. डी.एच. मसाले की ओर से वहन किया जाएगा।' कार्यक्रम के मुख्य वक्ता उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. महावीर जी(हरिद्वार) ने कहा कि 'आज हम अपनी संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं। धन कमाने की अंधी दौड़ में सभी शामिल हैं। मोबाईल के इस दौर में सबसे सम्पर्क जोड़ लिया जाता है किन्तु माता-पिता के लिए समय नहीं होता। इस स्थिति के लिए हम ही जिम्मेदार है।' उन्होंने अपने सम्बोधन में आगे कहा कि 'अधिक से अधिक दान करने की प्रवृत्ति होनी चाहिए। दान करने से आज तक किसी का कुछ घटा नहीं है, बल्कि बढ़ा ही है। दान में हमेशा आगे रहने के कारण ही आज महाशय जी को भामाशाह कहा जाता है।'

यज्ञशाला का शिलान्यास श्री आनन्द देव आर्य द्वारा किया गया। आवासीय कॉटेज और ध्यान केन्द्र का शिलान्यास श्री जयसिंह कुंडलिया व श्री चन्द्र प्रकाश सिंघल ने किया। गौशाला की नींव श्री अजय आर्य और उनके परिवार द्वारा रखी गई। मंच संचालन श्री सत्येन्द्र आर्य ने किया। समारोह का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ। यज्ञोपरान्त महाशय जी द्वारा ओ३म् ध्वज फहराया गया। विशेष अतिथि सर्वश्री धर्मपाल आर्य प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं महामंत्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह